डॉ.अजय प्रसून

जन्मस्थान- लखनऊ
शिक्षा- एम ए हिन्दी,बी एम एस
प्रकाशन- पंद्रह अनागत कविता संग्रह प्रकाशित
सम्पादन- ताम्रपर्णी त्रैमासिकी एवं पाँच अनागत कविता संग्रह
सम्मान- सोहन लाल द्विवेदी बल कविता सम्मान, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, काव्य कृति 'प्रश्न अनशन किये बैठे हैं' पर राज्य कर्मचारी संस्थान, उत्तर प्रदेश द्वारा 1 लाख रुपये का पुरष्कार एवं सम्मान इत्यादि।
सम्प्रति- होम्यो चिकित्सक

बेटियाँ ही तो हमारी आस हैं,
बेटियाँ ही तो सुदृढ़ विश्वास हैं।
आँख का काजल हमारी बेटियाँ,
शुद्ध गंगा जल हमारी बेटियाँ ।
बेटियाँ राधा भी हैं सीता भी हैं,
मन से निर्मल सौम्य शुभ गीता भी हैं।
आत्माये कल्पतरुओं से भरी ,
देह से कोमल हैं सुपुनीता भी हैं।
काल से बद करके लेतीं होड़ ये,
टूटते रिश्तों को देतीं जोड़ ये।
हों भले चंचल हमारी बेटियाँ,
सृष्टि का आँचल हमारी बेटियाँ ।
बेटियों से पर्व हैं त्योहार हैं,
बेटियाँ हैं तो सपन साकार हैं।
इनमें सेवा भाव है ऐसा भरा,
मानो जीवन का यही आधार हैं।
दु:ख का सागर कोई लहराये तो,
सामने दुश्मन कोई आ जाये तो ।
मुश्किलों का हल हमारी बेटियाँ,
हैं बड़ा संबल हमारी बेटियाँ ।
हम इन्हें अपने हृदय का स्नेह दें,
दें सुरक्षा एक सुन्दर गेह दें ।
भूल पायें जिसको जीवन भर न ये,
एक बादल बन के अमृत मेह दें।
ये जियें आशीष की छाया तले,
इनके मानस में शिर्व सुन्दर पले।
शुभ अनागत फल हमारी बेटियाँ,
एक स्वर्णिम पल हमारी बेटियाँ ।
ये बड़ी होकर के सावित्री बनें,
ये महादेवी सी कवयित्री बनें।
इनमें लक्ष्मी बाई जैसी वीरता,
इंदिरा जैसी महानेत्री बनें।
सामने आपत्तियां जो आ पड़ें,
आगे बढ कर ये सदा उनसे लडें ।
हैं कमल का दल हमारी बेटियाँ,

आगमन रश्मियों का हुआ

आगमन रश्मियों का हुआ
स्वागतं सृष्टि करने लगी,
धूप मनमोहिनी गुनगुनी
जैसे मन में उतरने लगी।

आपने देखे होंगे कई
गीत भी जन्म लेने लगे,
शब्द मनुहार के प्यार के
सोये थे जो अचानक जगे।
आपको सोचने मे लगे
कामना हर निखरने लगी।

मौन साधे हुए सिंधु हैं
किन्तु लहरें न चुपचाप हैं,
नैन की पुतलियों में बसे
आप केवल हैं बस आप हैं।
मान भी लीजिए बात को
प्रीति की शाख झरने लगी।

रात की बात को छोड़िये
भोर हमको मिलाने चली,
कुछ महकते सुमन सांस में
ज्यों मचाने लगे खलबली ।
हमको आभास ऐसा हुआ
लालिमा सी बिखरने लगी।

पल अनागत के वो आयेंगे
जब मिलेगी गगन से धरा,
पा के अमरत्व मधु प्रीति का
होगी काया अमर नश्वरा ।
हो के साकार भी कल्पना
रूपसी बन संवरने लगी।

ISSN:2583-8849